

HE IS DEAD. EXPLAIN THIS.

My Father's Funeral Was the End of His Life.
Not of His Presence.



FERDINANDO FREGA / BLADEFREGA

वे मर चुके हैं। इसे समझाइए।

मेरे पिता का अंतिम संस्कार उनके जीवन का अंत था। उनकी मौजूदगी का नहीं।

मेरे पिता मर गए।

यह कोई सिद्धांत नहीं है।

एक अंतिम संस्कार हुआ था।

एक ताबूत था।

एक कब्रिस्तान था।

रिश्तेदार थे, जो हाथ मिला रहे थे, धीमे स्वर में बोल रहे थे, वही वाक्य दोहरा रहे थे जो लोग सदियों से दोहराते आए हैं, जब उनके पास कहने को काम की कोई बात नहीं बचती।

वे उनासी साल के थे।

मैं साठ का था।

मौत का गणित बिल्कुल साफ़ था।

उसके बाद जो हुआ, वह साफ़ नहीं था।

एक साल तक मैंने वैसा ही बर्ताव किया जैसा कोई भी समझदार आदमी करता।

मैंने उनका शोक मनाया।

मैंने उन्हें याद किया।

मुझे उनकी कमी खली।

कभी-कभी मैं उनके बारे में बात करता।

ज़्यादातर नहीं करता।

ज़िंदगी, किसी सब्र वाले लेनदार की तरह, हर सुबह अपना बकाया वसूलने आ जाती।

बिल।

काम।

परिवार।

ज़िम्मेदारियाँ।

दिन हफ़्ते बन गए।

हफ़्ते महीने बन गए।

फिर कुछ बदला।

अचानक नहीं।

नाटकीय ढंग से नहीं।

चुपचाप।

जैसे लोहे पर जंग उभरता है।

जैसे भोर किसी कमरे में दाखिल होती है।

जैसे किसी बेटे को पता चलता है कि वक़्त बिना इजाज़त उस पर काम करता रहा है।

मैंने दोपहर के खाने के साथ एक गिलास वाइन पीनी शुरू कर दी।

मेरे पिता ऐसा किया करते थे।

मुझ पर तीखी मिर्चों की सनक सवार हो गई।

मेरे पिता को वे बहुत पसंद थीं।

एक ज़िद्दी ख़ाँसी शुरू हो गई।

वही चिढ़ाने वाली ख़ाँसी, जिसके न होने का नाटक वे बरसों करते रहे थे।

फिर आए चुटकुले।

वही सूखा व्यंग्य।

वही टाइमिंग।

पंचलाइन मारने से पहले मुस्कुरा देने की वही आदत।

एक शाम आईने में मेरी नज़र अपने अक्स पर पड़ी।

पल भर को मैं हँसा।

फिर रुक गया।

चेहरा मैंने पहचान लिया।

पर आदमी को नहीं पहचाना।

उस एहसास को मैं इससे बेहतर नहीं समझा सकता:

मैं हूबहू अपने जैसा दिख रहा था।

फिर भी लगता था कि वहाँ कोई और खड़ा है।

वह शुरुआत थी।

या शायद यह बहुत पहले शुरू हो चुका था, और बस मेरा ध्यान नहीं गया था।

लगभग उसी समय, कुछ और भी हुआ।

9 जून 2026 को मैं अपने कंप्यूटर के सामने बैठा, एक पुरानी वर्डप्रेस साइट का नवीनीकरण करने।

योजना यही थी।

एक मामूली प्रशासनिक काम।

उन उबाऊ कामों में से एक, जो वयस्क लोग इसलिए करते हैं कि हकीकत अपने होने पर अड़ी रहती है।

इसके बजाय, मैंने एक नया डोमेन खरीद लिया।

Gillettenarrative.com।

मैंने एक नाम गढ़ा।

फिर मैं कुछ ऐसा बनाने लगा जिसे बनाने को मुझसे किसी ने नहीं कहा था।

अजीब बात काम नहीं था।

अजीब बात मकसद था।

मैं कुछ बेचने की कोशिश नहीं कर रहा था।

मैं कोई कारोबार शुरू नहीं कर रहा था।

मैं निवेशकों के पीछे नहीं भाग रहा था।

मुझे किसी की मंजूरी की तलाश नहीं थी।

मैं सब कुछ मुफ्त में दे रहा था।

मैं जितनी ज़्यादा मेहनत करता, बात उतनी ही कम तर्कसंगत होती जाती।

दिन में दस घंटे।

बारह।

पंद्रह।

बीस।

अगर सनक का कोई दफ्तर होता, तो मैं उसकी रात की पाली का मैनेजर बन चुका था।

फिर भी मैं लगा रहा।

फिर बिंग ने कुछ अप्रत्याशित किया।

जिलेट की एक खोज में मेरी एक रचना सबसे ऊपर आई।

मेरे परिवार ने इसे किस्मत कहा।

एक संयोग।

एक तुक्का।

मैं सहमत था।

इसे परखने से ठीक पहले तक।

मैंने एक और रचना प्रकाशित की।

फिर वही हुआ।

फिर एक और।

फिर वही।

आखिरकार, संयोग भी अपनी व्याख्या माँगने लगा।

मेरे बहनोई को वकीलों की चिंता थी।

मुझे यह समझने की चिंता थी कि हो क्या रहा है।

ये दो बहुत अलग चिंताएँ हैं।

एक नतीजों से डरती है।

दूसरी कारण खोजती है।

मुझे हमेशा कारण ही ज़्यादा पसंद रहे हैं।

पर जब मैं जवाबों के पीछे भाग रहा था, मेरा शरीर बातचीत में शामिल हो गया।

पहले एक सूजी हुई गिल्टी।

फिर दाँत का फोड़ा।

फिर पीठ का दर्द।

फिर टाँग का दर्द।

एक के बाद एक लक्षण।

कुछ भी भयानक नहीं।

कुछ भी नाटकीय नहीं।

बस इतना कि आदमी ध्यान देने लगे।

एक दिन, तहखाने में कंप्यूटर का एक पुराना माउस ढूँढ़ते हुए, मुझे अपनी दादी की एक तस्वीर मिली।

मेरे पिता की माँ।

मैं उन्हें ढूँढ़ नहीं रहा था।

फिर भी वे वहाँ थीं।

एक भूले-बिसरे डिब्बे के भीतर इंतज़ार करती हुई।

मैंने तस्वीर अपने बटुए में रख ली।

इसलिए नहीं कि मेरे पास कोई वजह थी।

इसलिए कि न रखने की कोई वजह नहीं थी।

बाद में मैंने इनमें से कुछ बातें अपनी पत्नी को समझाने की कोशिश की।

उसने ध्यान से सुना।

फिर उसने एक मनोचिकित्सक से समय ले लिया।

मुझे यह बिलकुल वाजिब प्रतिक्रिया लगी।

सच तो यह है कि शायद मैं भी यही करता।

क्योंकि तब तक एक सवाल मेरे दिमाग पर क़ब्ज़ा जमाने लगा था।

एक ख़तरनाक सवाल।

इसलिए नहीं कि उसका कोई जवाब था।

इसलिए कि नहीं था।

जब कोई इंसान मरता है, तो ठीक-ठीक क्या बचा रहता है?

क्रानूनी तौर पर नहीं।

जैविक तौर पर नहीं।

धार्मिक तौर पर नहीं।

इंसानी तौर पर।

एक आवाज़?

एक आदत?

एक याद?

एक भंगिमा?

वाइन की पसंद?

एक मुस्कान?

क्या कोई पिता गायब होकर भी किसी दूसरी ज़िंदगी की बनावट के भीतर मौजूद रह सकता है?

मैं नहीं जानता।

मैं बस इतना जानता हूँ कि क्या हुआ।

मैं अपने पिता को जितना ढूँढ़ता गया, वे क़ब्रिस्तानों में उतने ही कम मिले।

और अपने भीतर उतने ही ज़्यादा।

आख़िरकार शारीरिक तकलीफ़ें कम हो गईं।

लहसुन।

बीन्स।

चावल।

लंबी सैर।

वक्रत।

शरीर ठीक हो गया।

सवाल बने रहे।

एक दोपहर मैं जेब में एक डॉलर लेकर घर से निकला।

जिन सत्तर डॉलर के सहारे मैंने महीने के बाक़ी दिन काटने की सोची थी, उनमें से बस एक डॉलर बचा था।

ख़ुशक्रिस्मती से, मेरी रसोई का भंडार मेरे बटुए से ज़्यादा अमीर था।

चावल।

बीन्स।

प्याज़।

लहसुन।

एक आदमी को ज़िंदा रखने के लिए काफ़ी।

किसी पर रोब जमाने के लिए नाकाफ़ी।

सड़क पर मुझे दो बुजुर्ग आदमी मिले।

ग़रीब।

खुद्दार।

उस तरह अदृश्य, जैसे बूढ़े लोग अक्सर हो जाते हैं।

उन्होंने पैसे नहीं माँगे।

उन्होंने मदद नहीं माँगी।

वे बस थे।

मैंने अपना आखिरी डॉलर उन्हें थमा दिया।

“इसे लेकर झगड़िएगा मत,” मैंने कहा।

“अगर खर्च न कर सकें, तो शायद यह आपके लिए किस्मत ले आए।”

वे हँस पड़े।

मैं चल दिया।

कुछ मीटर बाद, उनमें से एक ने मुझे वापस पुकारा।

“ओ भले आदमी।”

मैं मुड़ा।

वह मुस्कुराया।

फिर उसने कुछ ऐसा कहा जो मैं कभी नहीं भूला।

“जो कुछ जिया गया है, वह सिर्फ़ एक वजह से सुनाया जा सकता है।

क्योंकि वह हुआ।”

फिर वह चला गया।

मैंने उसे फिर कभी नहीं देखा।
जिंदगी मुश्किल हो जाए तो लोग अक्सर ईश्वर को खोजते हैं।
मैं कम ही खोजता हूँ।
इसलिए नहीं कि मैं उसे नकारता हूँ।
इसलिए कि खोजने में मैं कभी बहुत अच्छा नहीं रहा।
मुझे गौर करना ज़्यादा पसंद है।
देखते रहना।
ध्यान देना।
उन चीज़ों को बारीकी से देखना जिन्हें ज़्यादातर लोग ख़ारिज कर देते हैं।
एक संयोग।
एक तस्वीर।
एक मुस्कान।
एक मरा हुआ पिता, जो अपने जीवित बेटे की आदतों में प्रकट होता है।
मेरे पिता मर गए।
मैं यह जानता हूँ।
अंतिम संस्कार ने इसे साबित किया।
ताबूत ने इसे साबित किया।
क़ब्रिस्तान ने इसे साबित किया।
पर अगर मौत ने उनका जीवन ख़त्म किया, तो उनकी मौजूदगी ख़त्म नहीं की।
और अगर आप असहमत हैं, तो इसमें कोई हर्ज नहीं।
मैं आपसे यह नहीं कह रहा कि मेरा यक़ीन कीजिए।
मैं आपसे बस वही सवाल पूछ रहा हूँ जो मैंने खुद से पूछा था।
वे मर चुके हैं।
इसे समझाइए।

फर्दिनांदो